पंजीयन संख्या : 68939 /98 अंक – 26, वर्ष – 24

ज्ञान तत्व

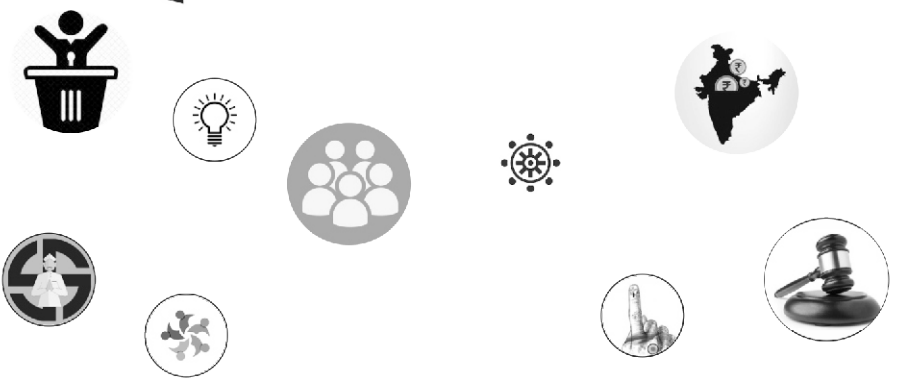

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

438

- : सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 15/2/2024

प्रकाशन की तारीख 01/2/2024

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचास पैसे)

पेज संख्या - 24

“ शराफत छोड़ो, समझदार बनो ”

“ सुनो सबकी, करो मन की ”

“ समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता ”

“ समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार ”

“ चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे ”

“ हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए ”

हिंदुत्व और राममन्दिर

1—साम्यवाद और इस्लाम के बल पर कांग्रेस जिंदा —

राम मंदिर के उद्घाटन में न जाने का निर्णय कांग्रेस पार्टी ने बहुत सोच समझ कर किया है। यह निर्णय पूरी तरह कांग्रेस पार्टी की विचारधारा के अनुरूप है। दुनिया में जो राजनैतिक ध्रुवीकरण बना हुआ है उसमें एक तरह साम्यवाद, इस्लाम और कांग्रेस पार्टी शामिल है। तो दूसरी और पश्चिम के लोकतांत्रिक देश ईसाईयत और हिंदुत्व एकजुट हो रहा है। हमास और इजराइल के टकराव में भी कांग्रेस पार्टी ने अपनी सोच के अनुसार ही मार्ग अपनाया। वर्तमान भारत में कांग्रेस पार्टी किसी भी परिस्थिति में साम्यवाद और इस्लाम से बाहर नहीं जा सकती। ऐसे वातावरण में उस राम मंदिर के उद्घाटन में जो बाबरी मस्जिद को हटाकर बन रहा है उसमें कांग्रेस पार्टी का शामिल होना उसके लिए आत्मघाती कदम होता। जब 70 वर्षों तक कांग्रेस पार्टी में मुस्लिम सांप्रदायिकता और साम्यवादी, तानाशाही के कंधे पर चढ़कर सरकार चलाई है तो इतनी जल्दी कांग्रेस पार्टी धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक बन जाए यह न तो संभव दिखता है न उचित। क्योंकि यदि कांग्रेस पार्टी राम मंदिर उद्घाटन में चली भी जाए तब भी उसे लाभ कम होता और नुकसान अधिक हो सकता है। क्योंकि साम्यवाद और इस्लाम की ताकत पर ही कांग्रेस पार्टी जिंदा है और इन दोनों की कीमत पर कांग्रेस पार्टी द्वारा हिंदुओं को अपने साथ लेने का प्रयास आत्मघाती कदम होता।

इस उद्घाटन में कांग्रेस के साथ—साथ शंकराचार्य भी नहीं जा रहे हैं। लेकिन दोनों के कारण अलग—अलग है। चार शंकराचार्य में से तीन बीजेपी समर्थक है और एक कांग्रेस समर्थक। कांग्रेस समर्थक शंकराचार्य को यह कह कर न्योता नहीं दिया गया कि उनका मामला तो न्यायालय में चल रहा है और जब तक न्यायालय निर्णय नहीं दे देता तब तक उनकी जगह पर वासुदेवाचार्य जी ही शंकराचार्य माने गए हैं। दूसरी बात यह भी है कि यह आयोजन शंकराचार्य के नेतृत्व में न होकर राजनेताओं के नेतृत्व में आयोजित है। स्पष्ट है कि राम मंदिर आंदोलन की लड़ाई संघ और भाजपा के नेतृत्व में लड़ी गई। कांग्रेस पार्टी ने इस आंदोलन का विरोध किया था। आंदोलन करने वालों में कोई शंकराचार्य भी शामिल नहीं थे यद्यपि बाहर से उनका समर्थन था। जेल जाने वाले और मुकदमा लड़ने वालों में भी कोई शंकराचार्य नहीं थे। इसलिए इस सफलता का श्रेय लेने में शंकराचार्य यदि पीछे हैं तो उसमें गलत क्या है? कांग्रेस पार्टी तो इसलिए जाना ठीक नहीं समझती कि उसने इस आंदोलन का विरोध किया था और वहां जाने से लोग वहां कांग्रेसियों का मजाक उड़ाएंगे। लेकिन तीन शंकराचार्य इस आंदोलन के समर्थक थे और आज भी इस कार्यक्रम के समर्थक हैं। भले ही इस राजनैतिक जश्न में आगे बढ़कर शामिल न हो रहे

हो। शंकराचार्यो का न आना भी तर्कसंगत है और कांग्रेस का न आना भी उनके हिसाब से उचित है। चारों शंकराचार्य राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के विरोध में हैं यह झूठी खबर फैलाई गई। श्रृंगेरी शारदा पीठ और द्वारका शारदा पीठ के शंकराचार्य ने बकायदा चिट्ठी लिख कर खबरों का खंडन किया है। दोनों शंकराचार्य ने कार्यक्रम को आशीर्वाद दिया है और कहा है कि धर्म द्वेषियो ने उनके बारे में झूठी खबर प्रचारित की है।

2—संघ के नेतृत्व में चला राम मंदिर आंदोलन

आदर्श स्थिति में समाज व्यवस्था सर्वोच्च होती है और धर्म सत्ता तथा राज्य सत्ता उसकी सहायक। अपराधियों से शरीफ लोगों की सुरक्षा के लिए सक्रिय इकाई को हम व्यवस्था कहते हैं। धर्म सत्ता ऐसे अपराधियों का हृदय परिवर्तन करती है, मार्गदर्शन करती है। समाज व्यवस्था बहिष्कार के माध्यम से ऐसे अपराधियों को अनुशासित करती है। राज्य व्यवस्था ऐसे अपराधियों को शासित करती है, दंडित करती है। व्यवस्था के तीनों अंगों में तालमेल होना चाहिए लेकिन वर्तमान समय में राज्य सत्ता ने धर्म सत्ता और समाज व्यवस्था को पंगू बना दिया है। पिछले वर्षों में जब हमारी राज्य व्यवस्था को अंग्रेजों ने गुलाम बना लिया था तब गांधी के नेतृत्व में अहिंसक लड़ाई के माध्यम से हम स्वतंत्र हुए। इस स्वतंत्रता का श्रेय गांधी को मिला और उसका लाभ 70 वर्षों तक नेहरू परिवार ने उठाया। हमारी धर्म व्यवस्था को मुसलमानों ने खतरे में डाला और उस खतरे से बचाव के लिए प्रतीक स्वरूप संघ परिवार के नेतृत्व में हमने राम मंदिर की लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में हम विजयी हुए और प्रतीक स्वरूप संघ के नेतृत्व में 22 जनवरी को राम मंदिर का उद्घाटन हो रहा है। इस लड़ाई में विजयी होने के लिए संघ उसी तरह प्रशंसा का पात्र हैं जिस तरह स्वतंत्रता संघर्ष में गांधी को प्रशंसा प्राप्त हुई थी। आज कांग्रेस और साम्यवादी मिलकर उसी तरह इस खुशी के क्षण में बाधा पैदा कर रहे हैं जिस तरह स्वतंत्रता के समय गांधी के नेतृत्व को संघ परिवार ने मानने से इनकार कर दिया था। सच बात यह है कि गांधी ने स्वतंत्रता दिलाई तो समाज गांधी की प्रशंसा करेगा और संघ ने धार्मिक आजादी दिलाई तो समाज संघ की भी प्रशंसा करेगा। हम तो समाज को सर्वोच्च मानने वाले हैं इसलिए हम दोनों को प्रशंसक हैं।

3—मोदी के द्वारा प्राणप्रतिष्ठा को समर्थन

राम मंदिर उद्घाटन की चर्चा का हमारा आज अंतिम दिन है। राम मंदिर का उद्घाटन नरेंद्र मोदी को ही करना चाहिए। क्योंकि राम मंदिर सिर्फ हिंदुओं का धर्म स्थान नहीं है बल्कि वह तो पूरे समाज का प्रेरणा केंद्र है। यदि कोई शंकराचार्य राम मंदिर पर अपना कोई विशेष अधिकार बतावे तो वह गलत है। क्योंकि राम जन्म स्थान शंकराचार्य के पहले का था बाद का नहीं। यदि राम

मंदिर हिंदुओं का स्थान भी है तो हिंदू धर्म शंकराचार्य से भी पहले था। शंकराचार्य जी ने हिंदू धर्म को सशक्त किया था और वर्तमान परिस्थितियों में शंकराचार्य की जगह कोई नया धर्माचार्य भी हिंदुत्व को नए ढंग से परिभाषित भी कर सकता है और आगे भी बढ़ा सकता है। हिंदुत्व की जो परिभाषा गांधी ने दी थी वह सबसे अच्छी परिभाषा मानी जाती है। उस परिभाषा के आधार पर वर्तमान शंकराचार्यों को भी यह बात स्पष्ट करनी चाहिए कि वह छुआ छूत के विषय में क्या विचार रखते हैं। वे वर्ण व्यवस्था को जन्म के आधार पर ठीक मानते हैं या कर्म के आधार पर। वे अन्य धर्मावलम्बियों को हिंदू धर्म स्थलों पर जाने के विषय में उदार दृष्टि को रखते हैं या कट्टर हैं। इस प्रकार के कुछ प्रश्नों पर कट्टर हिंदुत्व को गंभीरता से सोचना चाहिए। अब दुनिया हिंदुत्व की प्रतीक्षा कर रही है कट्टरवादी हिंदुत्व की नहीं। हम आधुनिकतावाद के विरुद्ध है इसका अर्थ यह नहीं कि हम रूढ़िवाद का समर्थन कर रहे हैं। हम वर्तमान वातावरण के अनुसार रूढ़िवाद में संशोधन का प्रस्ताव करते हैं और इस दृष्टि से राम मंदिर के 22 जनवरी का उद्घाटन की पूरी प्रक्रिया का समर्थन करते हैं।

राम मंदिर उद्घाटन के संदर्भ में नरेंद्र मोदी पूरे के पूरे धार्मिक हो गए हैं वह अनुष्ठान कर रहे हैं, जमीन में सो रहे हैं, फल फूल खा रहे हैं, प्रतिदिन मंदिरों में जा रहे हैं, कुछ धार्मिक प्रवचन भी दे रहे हैं। हर तरह से नरेंद्र मोदी धर्म गुरु बनने का प्रयास कर रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है की राजनीति से रिटायरमेंट के बाद नरेंद्र मोदी कोई बड़े धर्मगुरु बनने की ओर प्रयत्नशील हो कहीं शंकराचार्य को ऐसा तो खतरा महसूस नहीं हो रहा है क्योंकि नरेंद्र मोदी बुढ़ापे में भी घर में चुप बैठने वाले जीव तो नहीं है निरंतर सक्रिय रहते हैं कभी आराम नहीं करते। कुछ ना कुछ समाज के बारे में सोचते रहते हैं। इसलिए कुछ मन में ऐसा संदेह हो रहा है कि नरेंद्र मोदी भविष्य में राष्ट्रपति तो बनेंगे नहीं वैसी स्थिति में वे शंकराचार्य का स्थान ले सकते हैं। नाम भले शंकराचार्य ना हो नरेंद्र आचार्य हो और कोई नाम हो लेकिन बड़े धर्मगुरु बन सकते हैं मेरे विचार से यह अच्छा ही होगा कि नरेंद्र मोदी सरिखा एक साफ सुथरी नियत वाला व्यक्ति जिसे राजनीति का भी पूरा अनुभव हो समाज सेवा का भी पूरा अनुभव हो और वह धर्माचार्य बन जाए। भविष्य क्या होगा यह तो सिर्फ अटकल ही लगाई जा सकती है लेकिन संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। आज दुनिया की सामाजिक व्यवस्था को ऐसे धर्म गुरुओं के मार्गदर्शन और नेतृत्व की जरूरत है।

4—हिंदुत्व हुआ असुरक्षा से मुक्त

आज 22 जनवरी 2024 दोपहर के 1:00 बजे हैं आज का दिन ऐतिहासिक दिन है। जिस तरह भारत सन्1947 में विदेशियों से आजाद हुआ था इस तरह आज हिंदुत्व की आजादी का दिन है। यह सिर्फ राम मंदिर की प्राण

प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ नहीं है बल्कि हजारों वर्षों से हिंदुत्व की असुरक्षा से मुक्ति का दिन है। अब सुरक्षा की दृष्टि से आश्वस्त होने का दिन है। इस्लाम और साम्यवाद भारतीय शासकों के साथ मिलकर हिंदुत्व को समाप्त करने का षड्यंत्र कर रहे थे। आज के दिन से हिंदुत्व अपने को सुरक्षित महसूस करने लगा है क्योंकि हिंदुओं ने आक्रमणकारी मुसलमानों से राम जन्मभूमि संवैधानिक तरीके से वापस ले ली है। यह कोई साधारण दिन नहीं है क्योंकि दुनिया में मुसलमान एक बार जिस चीज पर कब्जा कर लेता है उसको मरते तक नहीं छोड़ता, लेकिन आज उसे कब्जा किए हुए राम जन्म स्थान को छोड़ने का दुर्दिन देखना पड़ा। आज से अब हिंदुत्व यह महसूस कर रहा है कि साम्यवाद और इस्लाम मिलकर भी हिंदुत्व को समाप्त नहीं कर पाएंगे। इसलिए आज के दिन को हम ऐतिहासिक घटना के रूप में मान रहे हैं। हिंदुत्व की सुरक्षा का कार्य मेरे हिसाब से अब पूरा हो गया है, अब हिंदुत्व एकजुट है सुरक्षित है खतरे से बाहर है। अब हमें नई नीतियों पर विचार करना चाहिए।

5—हिन्दुओं की एकजुटता से तुष्टीकरण करने वालों के पेट में मरोड़ —

अभी मैं रायपुर शहर में हूं। मैंने रायपुर का जो वातावरण देखा उस वातावरण को देखकर ऐसा स्पष्ट हुआ कि भारत में पुरानी मान्यताएं बिल्कुल बदल रही हैं। पहले मैं हमेशा सुनता था और अनुभव भी करता था कि मुसलमान भारत का एक जुट है हिंदू एकजुट हो ही नहीं सकता। मुसलमान जिसे चाहेगा वही चुनाव में जीत सकता है, वही सरकार बन सकती है। यह धारणा सत्तारूढ़ दल की भी थी और विपक्ष की भी थी लेकिन पिछले पांच सात वर्षों में यह धारणा बदलने लगी और आज का रायपुर का वातावरण देखकर मुझे यह महसूस हुआ यह धारणा पूरी तरह से समाप्त हो चुकी है। अब तो ऐसा दिख रहा है कि मुसलमान एकजुट हो ही नहीं सकता और हिंदू एकजुट हो सकता है। जो लोग पहले यह कहा करते थे कि अल्पसंख्यक तुष्टिकरण राजनीति के लिए आवश्यक है। वही लोग अब इस प्रकार की भाषा बोलने लगे हैं कि बहु संख्यक तुष्टिकरण का खतरा बढ़ता जा रहा है। मैं यह देख रहा हूं कि 70 वर्षों तक जो आंख पर पट्टी बांधकर अल्पसंख्यक तुष्टीकरण से संतुष्ट थे आज उन्हें भी बहुसंख्याक तुष्टिकरण की गंध आने लगी है। जो भारत में बदलाव दिख रहा है वह बदलाव अप्रत्याशित है लेकिन परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक था उचित है। और भविष्य में ठीक दिशा में ले जाएगा।

6— रामराज्य में हिन्दुत्व निर्भय होकर विश्वामित्र बन यज्ञ करें —

दुनिया के लिए हिंदुत्व सिर्फ एक धर्म नहीं संगठन नहीं विचारधारा है मार्गदर्शक है समस्याओं के समाधान बताने वाला है। अब हिंदुत्व पर खतरा पूरी तरह समाप्त हो चुका है। जब हजारों वर्ष पहले हिंदुत्व में कुछ विकृतिया आई थी अथवा हिंदुत्व को आक्रमण झेलने पड़े थे और हिंदुत्व गुलाम हो गया था

समाप्त होने का खतरा था, उस समय हिंदुत्व ने सुरक्षात्मक तरीके से अपने को बचा लिया। हिंदुत्व दुनिया का मार्गदर्शन नहीं कर सका परिणाम स्वरुप दुनिया में अनेक प्रकार की विकृतियां पैदा हुई। आर्थिक राजनीतिक सामाजिक धार्मिक सभी क्षेत्रों में गिरावट आई क्योंकि मार्गदर्शन का अभाव हो गया था और उच्छृखलता बढ़ती जा रही थी। अयोध्या की घटना के बाद हिंदुत्व पर संकट टल गया है। सुरक्षा की जिम्मेदारी नरेंद्र मोदी और भारत सरकार ने संभाल ली है। अब हिंदुत्व स्वतंत्रता पूर्वक इस दुनिया का मार्गदर्शन करने के लिए तैयार हो सकता है। जैसा राम की पहरेदारी के बाद निष्कंटक होकर विश्वामित्र यज्ञ कर रहे थे, अब हिंदुत्व को सुरक्षा की चिंता छोड़कर विस्तार की चिंता करनी चाहिए। दुनिया का मार्गदर्शन करना चाहिए दुनिया को राह बतानी चाहिए। स्पष्ट है कि सुरक्षात्मक उपाय अलग होते हैं और प्रचारात्मक उपाय अलग होते हैं विस्तार के मार्ग वही नहीं होते जो सुरक्षा के होते हैं। इसलिए हिंदुत्व को अब अपने विस्तार की दिशा में तैयारी करनी चाहिए।

7—सावरकर का हिंदुत्व एक दवा है गांधी का हिंदुत्व एक टानिक

यह बात अब साफ दिखने लगी है कि दुनिया में हिंदुत्व वैचारिक धरातल पर भी आगे बढ़ रहा है और संगठनात्मक रूप से भी। अब दुनिया में हिंदुत्व की एक अच्छी पहचान बन रही है। इसकी शुरुआत भारत से हो चुकी है। कश्मीर में धारा 370 का समाप्त होना, अयोध्या में राम मंदिर का बन जाना, वाराणसी में मंदिर में पूजा पाठ शुरू करना, मथुरा में भी धीरे—धीरे आगे बढ़ते जाना। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि इस्लाम ने ताकत के बल पर हिंदुत्व को कमजोर किया था और हिंदुत्व कानून के बल पर इस्लाम को कमजोर करेगा। इस्लाम ईश निंदा कानून का सहारा लेकर अत्याचार करता है हिंदुत्व समान नागरिक संहिता को आगे लाकर दुनिया के हर नागरिक को बराबरी का अधिकार देना चाहता है। आज भारत की यह स्थिति है कि एक मौलाना ने राम मंदिर के उद्घाटन में शामिल होने की गलती कर दी और सिर्फ इस गलती के लिए उसके खिलाफ सांप्रदायिक मुसलमानों ने फतवा जारी कर दिया। किसी नेहरूवादी या कम्युनिस्ट नेता ने फैसले के विरुद्ध में एक शब्द भी नहीं कहा। स्पष्ट है कि धीरे—धीरे इस्लाम या तो सुधरेगा या दुनिया से समाप्त हो जाएगा। दुनिया के लोगों को बराबरी का अधिकार तो देना ही होगा वर्तमान दुनिया ताकत के बल पर इस्लाम के प्रचार को स्वीकार नहीं करेगी। पहली बार किसी मौलाना ने इतनी हिम्मत की है और फतवे के बाद भी हिम्मत दिखाई है। सावरकरवादियों को भी इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि सारे मुसलमान एक है और सब मुसलमान को देशद्रोही घोषित कर दिया जाए। मैं सावरकरवादी और सांप्रदायिक मुसलमान दोनों को एक ही थैली के चट्टे बट्टे मानता हूं। दुनिया में हिंदुत्व की प्रतिस्पर्धा इस्लाम के साथ चल रही है। हिंदुत्व वैचारिक धरातल को लेकर आगे बढ़ना चाहता है, इस्लाम संगठनात्मक ताकत

के बल पर। हिंदुत्व की जो परिभाषा गांधी ने दी थी वह परिभाषा वर्तमान समय में बहुत उपयुक्त है सावरकर की परिभाषा उस समय उपयुक्त थी जब हिंदुत्व खतरे में था आज नहीं जब हिंदुत्व खतरे से बाहर है। अब नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत सुरक्षा की जिम्मेदारी ले चुके हैं। सावरकर का हिंदुत्व एक दवा है गांधी का हिंदुत्व एक टानिक है भारत की वर्तमान परिस्थितियों में दवा का प्रयोग नुकसान करेगा इस समय तो हमें टॉनिक की जरूरत है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि हमें सांप्रदायिकता से दूर हो जाना चाहिए सांप्रदायिकता का खुलकर विरोध कीजिए वैचारिक हिंदुत्व अपने आप इस्लाम को पीछे कर देगा। नरेंद्र मोदी मोहन भागवत गांधी विचारों के साथ मिलकर जो मार्ग दिखा रहे हैं उस मार्ग पर चलने की जरूरत है आप आस्वस्त रहिए जल्दी ही वाराणसी और मथुरा ही नहीं अन्य अनेक स्थान भी सांप्रदायिक इस्लाम से मुक्त हो जाएंगे।

8—ज्ञानवापी तहखाने में पूजा का अधिकार मिलना न्यायोचित —

अयोध्या मंदिर और वाराणसी मंदिर की परिस्थितियों में बहुत फर्क है। जिस समय अयोध्या में मंदिर तोड़कर मस्जिद बनी उस समय भारत गुलाम था मुसलमान भारत के राजा थे उस समय उन लोगों ने मंदिरों को तोड़ा। लेकिन वाराणसी के मंदिर में जिस समय पूजा पाठ बंद कराई गई उस समय भारत स्वतंत्र था उस समय नेहरू परिवार और नेहरू की संस्कृति भारत में चल रही थी। ऐसे स्वतंत्रता के काल में आज से 30 वर्ष पहले वाराणसी मंदिर में पूजा बंद करा दी गई। यह तो नई परिस्थितियां पैदा हुई और यहां वाराणसी में फिर से पूजा की अनुमति देने का प्रयत्न हो रहा है ।

30 वर्ष पहले मंदिर में पूजा और ऊपर वाली मस्जिद में नमाज अदा की जाती थी। प्रशासन में मुलायम सिंह के कार्यकाल में दोनों को बंद कर दिया। हिंदुओं ने इसका विरोध किया और मुसलमानों ने नहीं किया। अब प्रशासन ने हिंदुओं को पूजा पाठ की अनुमति दे दी। मुसलमानों को चाहिए था कि वे भी नमाज की अनुमति मांगते। किंतु मुसलमानों को हिंदुत्व के खिलाफ हमेशा आक्रामक ही रहना है जो मुसलमानों की एक बुराई है। वाराणसी के मुसलमानों ने वाराणसी में व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद करने की घोषणा की है। मेरी जानकारी के अनुसार बंद का बहुत मामूली असर रहा। कुछ मुसलमान दुकानदारों ने अपनी दुकाने बंद कर दी है और हिंदू दुकानदारों ने इस बंदी का यह कहकर स्वागत किया है कि यदि ऐसी दुकानबंदी लंबे समय तक चलती रहे तो यह झगड़ा अपने आप निपट जाएगा। मैं नहीं समझता कि भारत का मुसलमान किन गलत लोगों के बहकावे में इस प्रकार की गलती कर रहा है। यदि मुसलमान इस प्रकार के झगड़ों को सदा—सदा के लिए निपटाना चाहता है तो उसे उमा भारती की सलाह मान लेनी चाहिए कि काशी, मथुरा समझौते के अंतर्गत हिंदुओं को दे दिया जाए और हिंदू भविष्य में किसी अन्य मस्जिद पर दावा नहीं करेंगे। अन्यथा धीरे—धीरे काशी, मथुरा तो हाथ से जाएगा देश की अन्य अनेक मस्जिदों पर भी सच या झूठ दावेदारी का रास्ता खुल जाएगा।

9—साम्प्रदायिकता और संगठनवाद —

समाचार है कि उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में बजरंग दल से जुड़े नेता सहित चार लोगों को इसलिए गिरफ्तार किया गया है कि उन्होंने दंगा करने के उद्देश्य से किसी शहाबुद्दीन नामक मुसलमान को 2000 रुपये देकर उससे गौ हत्या करवाई या गाय के टुकड़े को किसी अन्य जगहों पर रखवाए थे। स्पष्ट है कि सांप्रदायिकता सिर्फ सांप्रदायिकता होती है, हिंदू मुसलमान का भी भेद नहीं करती। मुरादाबाद की इस घटना से यह बात साफ होती है कि हिंदू सांप्रदायिकता भी किसी भी सीमा तक आगे बढ़कर षड्यंत्र कर सकती है। मैंने स्वयं 40 वर्ष पूर्व अयोध्या में इस प्रकार की घटनाओं का प्रत्यक्ष जायजा लिया था। मेरी फिर से यह धारणा है कि मुस्लिम सांप्रदायिकता को दबाने के लिए हिंदू सांप्रदायिकता का सहारा तो लिया जा सकता है किंतु हिंदू सांप्रदायिकता को प्रोत्साहित करना खतरनाक होगा। उत्तर प्रदेश की सरकार इस बात के लिए बधाई के पात्र है कि उसने मुरादाबाद में एक बड़ी साजिश का खुलासा कर दिया। मेरे विचार से निष्पक्षता के मामले में योगी सरकार का कार्यकाल बहुत अच्छा है। संघ परिवार को इस प्रकार के मामलों में और सावधान रहना चाहिए।

<u>चुनावी राजनीति</u>

10—साम्प्रायिकता भ्रष्टाचार और गुड़ागर्दी के विरोधी कहां जायें —

मैं नीतीश कुमार का प्रशंसक रहा हूं वर्तमान समय में विपक्ष में नीतीश कुमार के समान गंभीर और योग्य और कोई नेता नहीं है। नीतीश कुमार जो भी निर्णय लेते हैं वह सोच समझ कर लेते हैं जो बोलते हैं उसका कोई अर्थ होता है बचकानी बातें नहीं करते नीतीश भारतीय जनता पार्टी छोड़कर जब कांग्रेस और लालू परिवार के साथ गए उसके बाद भी मैं हमेशा उनकी प्रशंसा की आलोचना नहीं भले ही उनका निर्णय गलत था। नीतीश कुमार दो बातों पर बहुत विरोधी हैं पहले सांप्रदायिकता और दूसरा भ्रष्टाचार इन दोनों को नीतीश कुमार स्वीकार नहीं कर सकते। नीतीश के सामने यह संकट है कि वह हिंदू मुस्लिम के बीच किसी प्रकार का विभाजन पसंद नहीं करते इसलिए भारतीय जनता पार्टी से उनके संबंध यदा कदा खराब होते रहते हैं। दूसरी ओर नीतीश कुमार भ्रष्टाचार से कोई समझौता नहीं करते इसलिए उनके संबंध लालू परिवार से भी समय समय पर खराब होते रहते हैं। नीतीश कुमार गुंडागर्दी और दादागिरी को भी पसंद नहीं करते इसलिए लालू परिवार से उनका संबंध लंबे समय तक चल ही नहीं सकता क्योंकि भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी लालू परिवार के नस—नस में है। जबकि भारतीय जनता पार्टी के स्वभाव में सांप्रदायिकता तो दिखती है गुंडागर्दी और भ्रष्टाचार नहीं दिखता इसलिए अब तक के राजनैतिक जीवन में नीतीश कुमार का दो तिहाई कार्यकाल भारतीय जनता पार्टी के साथ रहा और एक तिहाई लालू परिवार के साथ। भविष्य में भी मेरे विचार से इस दुविधा का कोई

अंत होता नहीं दिखता। अच्छा तो यह होगा कि वर्तमान विपक्ष पूरी तरह समाप्त हो जाए और नरेंद्र मोदी के खिलाफ एक अच्छे विपक्ष के रूप में नीतीश कुमार सामने आवे जो गुण दोष पर सरकार का विरोध करें। सरकार को प्रतिपक्ष माने विरोधी पक्ष नहीं। नीतीश कुमार जहां भी रहेंगे मैं उनकी प्रशंसा करूंगा।

11—सोच समझ कर उठाया गया बिहार में कदम —

मैं एक बहुत ही विश्वसनीय लेखक त्रिदीव रमन को हमेशा पढ़ता हूं सप्ताह में एक दिन मिर्च मसाला कोलम के अंतर्गत वे राष्ट्रीय राजनीति की चर्चा करते हैं। उनकी जो चर्चा होती है बहुत तथ्य होते हैं अनेक वर्षों से पढ़ता रहा हूं और आज भी मानता हूं कि उनका लिखा हुआ बहुत सार गर्भित और महत्वपूर्ण होता है। त्रिदेव रमन जी ने 31 दिसंबर को मिर्च मसाला में यह बात साफ कर दी थी कि नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी के बीच बात पक्की हो गई है अब नीतीश कुमार जल्दी ही वर्तमान बिहार सरकार से पिंड छुड़ा लेंगे। उस लेख में यहां तक लिखा गया था कि 22 जनवरी को नीतीश कुमार इस संबंध में साफ—साफ घोषणा कर सकते हैं। मुझे उनका लिखा हुआ अच्छी तरह याद है और मैं यह कह सकता हूं कि नीतीश कुमार अकस्मात भारतीय जनता पार्टी से जाकर नहीं जुड़े हैं, सच्चाई यह है कि कांग्रेस पार्टी दांव पेच कर रही थी जो नीतीश कुमार को पसंद नहीं था।

12—नीतीश कुमार एक सच्चे समाजवादी राजनेता —

नीतीश कुमार में फिर से भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर सरकार बना ली इस संबंध में नीतीश कुमार पर कई आरोप लगे। लेकिन मैं जहां तक जानता हूं कि नीतीश कुमार ने कभी भी दल बदल नहीं किया कभी सिद्धांतों से कोई समझौता नहीं किया। यह जरूर है की परिस्थितियों के अनुसार उन्होंने अपने सिद्धांतों के अनुसार चयन किया। स्पष्ट है कि नीतीश कुमार आर्य समाज से भी जुड़े रहे हैं और समाजवादी विचारों के भी रहे हैं नीतीश कुमार ने बचपन में ही अपने विवाह के समय अपने परिवार से विद्रोह कर दिया था। उनके दहेज के विरोध में परिवार को मजबूर कर दिया था, क्योंकि नीतीश कुमार आर्य समाज और समाजवादी विचारों के मजबूत पुरोधा रहे हैं। नीतीश कुमार कर्पूरी ठाकुर के साथ रह चुके हैं। नीतीश कुमार हमेशा धर्मनिरपेक्ष रहे कभी उन्होंने सांप्रदायिकता से समझौता नहीं किया परिस्थिति अनुसार भारत में दो सांप्रदायिक दलों के बीच जो ध्रुवीकरण हो रहा है उसमें किसी न किसी के साथ जुड़कर सरकार बनाना उनकी मजबूरी है। यदि नीतीश कुमार ज्यादा खड़े हो जाएंगे तो बिहार में बार—बार चुनाव ही होते रहेंगे कोई सरकार नहीं बन सकेगी। इसलिए नीतीश कुमार ने भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता के बीच अपना समाजवादी दृष्टिकोण साथ में रखकर दोनों के साथ परिस्थितिजन्य समझौते किये। मेरे विचार से नीतीश कुमार ने जो किया वह ठीक किया क्योंकि एकला चलो राजनीति के लिए कोई अच्छी धारा नहीं है। नीतीश कुमार ने देश की

इच्छाओं को ठीक से समझा उनका कदम बहुत सोचा समझा हुआ है। देश में विपक्ष समाप्त हो रहा है ऐसे समय में नीतीश कुमार के नेतृत्व में एक मजबूत विपक्ष की जरूरत है। वर्तमान विपक्षी दलों को विपक्ष की भूमिका निभाना नहीं आता और वे नीतीश को मानने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए अब सत्ता दल में ही रहकर नीतीश विपक्ष की भूमिका निभाएंगे। यह बात बिल्कुल साफ है कि वह भारतीय जनता पार्टी के साथ एडजस्ट नहीं कर पाएंगे और विपक्ष की भूमिका में ही रहेंगे, लेकिन यह देश के हित में है कि वर्तमान सांप्रदायिक भ्रष्ट विपक्ष समाप्त होकर नीतीश के नेतृत्व में भ्रष्टाचार मुक्त सांप्रदायिकता मुक्त विपक्ष तैयार हो। मैं नीतीश को शुभकामनाएं देता हूं।

आचार्य पंकज जी ने मुझे फोन करके बताया कि नीतीश कुमार धर्म निरपेक्ष नहीं है बल्कि 'सर्व धर्म समभाव' वाले हैं वे शांतिपूर्ण हिंदुत्व और इस्लाम को एक समान स्तर पर देखते हैं। पूजा पद्धति चाहे अलग–अलग भी हो लेकिन यदि प्रवृत्ति से मनुष्य अच्छा है सही है तो उसे धार्मिक माना जाना चाहिए। मैं आचार्य जी की सलाह से सहमत हूं वास्तव में यह शब्द सर्वधर्म समभाव होना चाहिए था जिसे मैं प्रचलित भाषा में धर्मनिरपेक्ष लिख दिया

<u>विविध विषयों पर मुनि जी का लेख</u>

13–नेता और अफसर की मिली–भगत से होता हैभ्रष्टाचार–

वर्तमान भारत की दो प्रमुख समस्याएं हैं–एक है सांप्रदायिकता और दूसरा है भ्रष्टाचार सांप्रदायिकता पर तो काम साफ दिख रहा है, भ्रष्टाचार पर क्या काम हो रहा है यह उतना साफ नहीं दिखता। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए सबसे सफल उपाय है निजीकरण लेकिन निजीकरण करने की कोशिश हुई तो भारतीय जनता पार्टी के ही अनेक लोगों ने विरोध शुरू कर दिया। सरकारी कर्मचारी भी निजीकरण के विरोध में आ गए। विपक्ष तो विरोध में था ही मजबूर होकर सरकार ने दूसरा मार्ग अपनाया, भ्रष्ट लोगों को जेल में डाला जाए।

भ्रष्टाचार नेता खुद नहीं करता सरकारी कर्मचारियों से कराता है। इसलिए नेता लोगों को पकड़ना उतना आसान नहीं होता। तब अंत में यह निर्णय किया गया कि जब तक राजनेता और सरकारी अफसर, इन दोनों की मिली भगत पर चोट नहीं होगी तब तक भ्रष्टाचार नहीं रुकेगा। इसलिए भ्रष्टाचार करने वाले बड़े–बड़े अफसर को जेल में डालना शुरू किया गया है। जब से सरकारी अफसर जेल जा रहे हैं तब से भ्रष्टाचार में कमी साफ दिखने लगी है क्योंकि नेता भ्रष्ट अफसर के साथ मिलकर भ्रष्टाचार करता है। नेता और अफसर के बीच में अब एक अविश्वास की खाई भी बढ़ रही है। मेरे विचार से भ्रष्टाचार जल्दी ही नियंत्रण में आ जाएगा। वर्तमान सरकार बिल्कुल ठीक दिशा में कार्य कर रही है।

भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा माध्यम सरकारी कर्मचारी होते हैं। सरकारी कर्मचारी नेताओं के दबाव में भी भ्रष्टाचार करते हैं और अपने स्वार्थ में भी करते हैं। सरकारी कर्मचारी अगर नेताओं के साथ ना जुड़े तो भ्रष्टाचार की संभावना बहुत कम हो जाती है। चंडीगढ़ के चुनाव में जिस प्रकार सरकारी कर्मचारियों को लालच देकर या दबाव बनाकर चुनाव प्रणाली को प्रभावित किया गया वह शर्मनाक उदाहरण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी कर्मचारी और नेताओं की मिली भगत सबसे ज्यादा घातक है। आप आज भी देख रहे होंगे की दिल्ली में महत्वपूर्ण सरकारी कर्मचारियों के घर में छापे डालकर उनकी जांच की जा रही है। नेताओं के यहां जो अफसर गलत कार्य कर रहे थे उनकी जांच हो रही है। छत्तीसगढ़ में भी एक मंत्री के यहां काम करने वाले अफसर पर ईडी ने जांच की और अनेक सुराख पकड़े। इस तरह भ्रष्टाचार को रोकने के लिए यह महत्वपूर्ण माध्यम माना जा रहा है और मुझे यह विश्वास है कि सरकारी कर्मचारी अब नेताओं से डर कर उस तरह गलत नहीं करेंगे जिस तरह अब तक करते रहे हैं। मैंने देखा है कि किस तरह 30 वर्ष पहले मुझे नक्सलवादी घोषित कराकर बर्बाद करने की सरकारी कर्मचारियों को मिलाकर ही योजना बनी थी। मैंने जीवन में इस प्रकार के अनेक उदाहरण देखें हैं मुझे उम्मीद है कि इस दिशा में नरेंद्र मोदी सरकार लगातार आगे बढ़ती रहेगी। सरकारी कर्मचारियों को भी मेरी सलाह है कि वह पुरानी मजबूरी से बाहर होकरउन्हें नेताओं के गलत कार्यों को मानने से इनकार करना चाहिए।

14—सरकारी कर्मचारियों का वेतन हो बाजार भाव के अनुरूप —

मेरे एक मित्र सत्य प्रकाश राजपूत जी हैं जो समाजवादी विचारों के हैं उन्होंने कल मेरे लेख पर कई बार प्रश्न खड़े किए। उनका मानना है कि सरकारी कर्मचारियों का वेतन कम है वे तो अपने बच्चों को भी ठीक से नहीं पढ़ा पा रहे हैं। अस्पतालों में उनका इलाज भी ठीक से नहीं हो रहा है यदि सरकारी कर्मचारी ही दुखी रहेंगे तो जनता का क्या हाल होगा।

मैं उनकी इस बात से सहमत नहीं हूं। मेरा मानना है की जनता और सरकार के बीच एक ऐसा रिश्ता है जिसमें जनता को बकरे के समान माना गया है और सरकार मालिक के समान होती है। सरकार बकरे को समय पड़ने पर काटना अपना अधिकार समझती है और उसे काटने के लिए शस्त्र रूप में सरकारी कर्मचारियों का उपयोग करती है। इसलिए सरकारी कर्मचारियों को झाड़ पोछकर मजबूती से तैयार रखा जाता है। जिससे वह समय पर काम आ सके। भारत में जहां 8 घंटे में मेहनत करने वाले को कोई अधिकार भी प्राप्त नहीं है और उन्हें बाजार में महीने में ₹8000 के आसपास वेतन मिल पाता है। वहीं उसके समान योग्यता के एक सरकारी कर्मचारियों को ₹40000 महीना मिलता है। ऊपर से उसको पावर भी मिलता है, उसके साथ—साथ इज्जत भी मिलती है। इसके बाद भी हमारे मित्र सरकारी कर्मचारियों को और अधिक सुविधाएं

दिलाना चाहते हैं। मैं उनकी इस मांग से सहमत नहीं हूं सरकारी कर्मचारियों का वेतन टेंडर के आधार पर तय कर दिया जाए कि जो व्यक्ति कम में काम करना चाहेगा उसे ही नौकरी दी जाएगी तो मुझे उम्मीद है कि जितने सरकारी नौकरी पाने के लिए भाग दौड़ है वह भाग दौड़ कम हो जाएगी। मैं यह प्रत्यक्ष देख रहा हूं कि हर आदमी सरकारी नौकरी पाने के लिए भाग दौड़ कर रहा है और हर सरकारी कर्मचारी नेता बनने के लिए भागदौड़ कर रहा है। क्यों ना जनता और नेता के संबंधों को बदल दिया जाए, जनता को मालिक बना दिया जाए नेताओं को मैनेजर और सरकारी कर्मचारियों को जनता का नौकर। यदि ऐसा कर दिया जाए तो यह मारामारी और भाग दौड़ अपने आप खत्म हो जाएगी। मैं सरकारी कर्मचारियों का वेतन बाजार के हिसाब से दिए जाने की मांग करता हूं।

15—जेल जाने से डर रहे अरविन्द केजरीवाल —

पहले हमें यह उम्मीद थी कि अरविंद केजरीवाल सामाजिक क्रांति के अगुआ बन सकते हैं, जब उन्होंने अन्ना हजारे को छोड़ा तो हम लोगों को निराशा हुई। लेकिन उसके बाद भी यह उम्मीद बनी हुई थी कि अरविंद राजनीति को नई दिशा दे सकते हैं। मुख्यमंत्री बनने के बाद अरविंद केजरीवाल ने जो लाइन पकड़ी उस लाइन से पूरे देश को बहुत निराशा हुई है। अरविंद केजरीवाल अपने बंगले में इस तरह धन खर्च करेंगे यह उम्मीद हम लोगों ने कभी की ही नहीं थी। जब यह मामला प्रकाश में आया और मेरे जैसे लोगों ने इस विषय पर आपत्ति की तो अरविंद को यह कहना चाहिए था कि यदि आप लोग इस भवन पर आपत्ति करते हैं तो मैं अपने छोटे से भवन में चला जाता हूं। मैं वहीं से सरकार चला लूंगा। जो अरविंद आज जेल में बैठकर सरकार चलाने को तैयार हैं वही अरविंद अपने छोटे से घर के सरकार चलाने को तैयार नहीं हुए। यह जानकर हम सबको निराशा हुई। बार—बार अरविंद मंचों पर आकर यह बात कहते रहे कि मुझे जेल जाने से कोई डर नहीं है, यह बात उन्होंने सैकड़ों बार कही। जब जेल जाने की स्थितियां पैदा हुई तब अरविंद केजरीवाल डरकर भाग गए। अरविंद केजरीवाल ईडी के सामने प्रस्तुत होते और वहां जाकर कहते कि लो मुझे जेल भेज दो तब शायद अरविंद केजरीवाल की कुछ प्रतिष्ठा बच गई होती। जेल जाना ना जाना अलग बात है और अपने को प्रस्तुत करना अलग बात है। अरविंद केजरीवाल जेल जाने से डर रहे हैं, अरविंद केजरीवाल छोटे घर से सरकार चलाने में असहज महसूस कर रहे हैं, अरविंद केजरीवाल को प्रधानमंत्री की कुर्सी से नीचे कुछ मंजूर नहीं है। अरविंद केजरीवाल इतना बदल गए यह देखकर हम लोगों को बहुत दुख है।

16—कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्यवृद्धि ही समाधान है —

जिस तरह भौतिक विकास का परिणाम,बिगड़तानैतिक पतन और पर्यावरण होता है।उसी तरह बौद्धिक विकास का भी शारीरिक श्रम पर दुष्प्रभाव

पड़ता ही है। किसी एक की भी अनदेखी करना उचित नहीं है। वर्तमान दुनिया में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जो विकास हो रहा है उसका प्रभाव शारीरिक श्रम पर पड़ना निश्चित है। दुष्प्रभाव को रोकने के लिए विकास की गति पर बंधन लगाना भी उचित नहीं है और श्रम शोषण के नए तरीकों का विकास भी उचित नहीं है। तकनीक को निर्बाध गति से आगे बढ़ना चाहिए और उस तकनीक का लाभ मानवीय श्रम तक पहुंचना चाहिए, यही न्याय संगत होगा। दुनिया में मैं अकेला व्यक्ति हूं जिसने 70 वर्ष पहले से लगातार यह आवाज उठाई है कि कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि इस असंतुलन को रोकने में बहुत सहायक हो सकती है। श्रम विरोधी तथा अमानवीय प्रवृत्ति के बुद्धिजीवियों ने आज तक इस आवाज को अनसुना किया है। मेरी विचार से इस समस्या का और कोई समाधान नहीं है। देर सवेर दुनिया को यह बात माननी ही होगी,कि सब प्रकार के टैक्स हटाकर कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि कर दी जाए। मैं नरेंद्र मोदी जी से निवेदन करता हूं कि वह इस मानवीय कार्य में दुनिया को नया रास्ता दिखाने की पहल करें।

17—कांग्रेस पार्टी में ही हो रही राहुल गांधी की दुर्दशा

कांग्रेस पार्टी में भी बेचारे राहुल गांधी की अब कोई नहीं सुन रहा है। अभी विधानसभाओं के चुनाव में राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने राहुल गांधी की कोई सलाह नहीं मानी और स्वतंत्रता पूर्वक सारे निर्णय लिए बेचारे राहुल गांधी मन मसोस कर रह गए। तेलंगाना के चुनाव में कांग्रेस पार्टी जीत गई लेकिन चुनाव समाप्त होते ही वहां के मुख्यमंत्री ने स्वतंत्र निर्णय लेने शुरू कर दिए। राहुल गांधी ने खुलकर के जिन अडानी का विरोध किया उसी कांग्रेस पार्टी के मुख्यमंत्री ने तेलंगाना में अडानी को 12 हजार करोड़ का ठेका दे दिया। तेलंगाना के कांग्रेसी मुख्यमंत्री का यह मानना है कि अडानी ही इस ठेके के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। विचित्र बात यह है कि कांग्रेस पार्टी में ही बेचारे राहुल की यह दुर्दशा हो रही है। अभी—अभी राहुल गांधी न्याय यात्रा पर निकले हैं। उस न्याय यात्रा के लिए भी कांग्रेस के अध्यक्ष ने, अभी न्याय यात्रा न करने की सलाह दी थी। उन्होंने यह कहा था कि न्याय यात्रा के लिए हमारे पास खर्च की व्यवस्था नहीं हो सकेगी लेकिन राहुल गांधी नहीं माने अपनी यात्रा पर निकल गए। फिर भी मैं यह महसूस करता हूं कि राहुल गांधी की नियत बिल्कुल ठीक है। समझदारी का अभाव जरूर है लेकिन राहुल गांधी की बात कांग्रेस पार्टी के लोगों को समझनी चाहिए। राहुल गांधी ने सोचा था कि पूरा का पूरा विपक्ष राम मंदिर का बहिष्कार करेगा लेकिन नरेंद्र मोदी ने यह आह्वान किया कि 22 तारीख को सब लोग अपनी—अपनी जगह से मंदिरों में जाएं। विपक्ष के अधिकांश नेताओं ने यह घोषणा कर दी कि 22 तारीख को वे लोग मंदिरों में जाएंगे पूजा करेंगे क्योंकि अधिकांश विपक्षी दलों के नेताओं को राम पर भी विश्वास है और हिंदुओं के संगठित शक्ति पर भी विश्वास है, जो

राहुल गांधी को नहीं है। इस तरह राहुल गांधी पर चौतरफा अविश्वास हो रहा है जो राजनैतिक दृष्टि से राहुल के लिए अच्छा नहीं है।

18– इस्लाम को हिंदुत्व से सिखने की जरूरत

मैंने पहले भी कई बार लिखा है और फिर स्पष्ट कह रहा हूं कि इस्लाम या तो अपनी नीतियों में बदलाव करें अन्यथा समाप्त हो जाएगा। इस्लाम को मानने वाले मुसलमान ना कभी बुद्धि से काम लेते हैं ना तर्क से, वे तो सिर्फ मरना–मारना ही जानते हैं। यदि इस्लाम के विरुद्ध कोई संगठित समूह दिखता है तो यह आंख बंद करके एकजुट हो जाते हैं और जब ऐसा समूह नहीं रहता तो आपस में ही लड़ना शुरू कर देते हैं। मुसलमान कभी शांति से ना रहता है ना रहने देता है। पिछले दिनों जब इजराइल ने हमास पर आक्रमण किया था तब दुनिया भर के मुसलमान एकजुटता की बात करने लगे थे। इस प्रकार एकजुटता की बात का नेतृत्व ईरान और पाकिस्तान मिलकर कर रहे थे। फिलहाल इजराइल और हमास की लड़ाई लंबी खिंच गई है और ईरान और पाक एक दूसरे के खिलाफ युद्ध करने के लिए कमर कस रहे हैं। भारत तथा अन्य पश्चिमी देश जो खुलकर इजरायल के पक्ष में खड़े थे उन दोनों को इस लड़ाई में मजा आ रहा है और चीन इस लड़ाई से परेशान है। मेरा विचार है कि इस्लाम को हिंदुत्व से नीतियों के मामले में बहुत कुछ सीखने की जरूरत है? दिन–रात मरने–मारने के लिए तैयार रहना कोई अच्छी आदत नहीं है।

19–अविमुक्तेश्वरानंद का अतीक अहमद का पक्ष लेनागलत–

हमारे शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद जी ने विचित्र बयान देकर एक समस्या पैदा करदी है। उन्होंने यह कहकर हलचल मचा दी है कि अतीक अहमद की हत्या नहीं होनी चाहिए थी। इसके लिए सुप्रीम कोर्ट को संज्ञान लेना चाहिए। अतीक अहमद बिना वैधानिक कार्यवाही के किस तरह मारा गया और पुलिस उसे क्यों नहीं बचा सकी। अतीक अहमद न्यायालय की तरफ से गिरफ्तार था और पुलिस के संरक्षण में था।मैं भी अविमुक्तेश्वरानंद जी का प्रशंसक रहा हूं लेकिन अतीक अहमद जैसे खूंखार अपराधी को यदि किसी अपराधी ने मार दिया तो इससे किसी शंकराचार्य को क्यों कष्ट हो रहा है। ऐसे समय में जब राम मंदिर उद्घाटन के लिए उन्हें आमंत्रण नहीं मिला है और वह इस संबंध में लगातार बयान दे रहे हैं। इस कालखंड में अतीक अहमद की चिंता करना मेरे विचार से शंकराचार्य जी के लिए उचित नही है। शंकराचार्य जी को अपना यह बयान वापस लेना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपराधी है और उसे अपराधी को हम दंड नहीं दिला पा रहे हैं। ऐसे खूंखार अपराधी के मारे जाने से चिंता क्यों होनी चाहिए? मैं शंकराचार्य जी के इस कथन का विरोध करता हूं।

20–राजनीति की बेढंगी चाल –

राजनीति अपना रंग किस प्रकार बदलती है राजनीति की भाषा किस तरह अन्य भाषाओं से अलग होती है इसका प्रमाण कल देखने को मिला। असम में राहुल गांधी ने यह स्पष्ट किया कि मेरे कार्यकर्ता किसी प्रकार का कानून नहीं तोड़ेंगे क्योंकि हम तो कानून का पालन करने वाले लोग हैं। साथ ही हमारे कार्यकर्ता बब्बर शेर के समान है और अगर हमारे कार्य में कोई बैरियर या रुकावट आएगी तो उसे उसी तरह तोड़ देंगे जैसे कल पुलिस की सारी बेरिकेटिंग कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने तोड़ दी थी। कांग्रेस के कार्यकर्ता कानून नहीं तोडेंगे लेकिन पुलिस का घेरा पूरी तरह तोड़ सकते हैं। असम के मुख्यमंत्री ने यह कहा की जिन लोगों ने पुलिस का घेरा तोड़ा है इन लोगों पर कानून के अनुसार कार्यवाही की जाएगी उन पर विभिन्न मुकदमे लगाए जाएंगे लेकिन लोकसभा चुनाव तक उनकी गिरफ्तारी नहीं होगी।

समझ में नहीं आया की राजनीति किस प्रकार की भाषा बोलती है। कोई कानून नहीं तोडेंगे और पुलिस का घेरा पूरी तरह तोड़ देंगे मुकदमे कायम किए जाएंगे लेकिन अभी गिरफ्तारी नहीं होगी यह ढुलमुल बातें हैं।

21—देश चले सन्तुलन के मार्ग पर—

आज भारत का गणतंत्र दिवस है। हम देश की प्रमुख समस्याओं की चर्चा कर रहे हैं। स्वतंत्रता के पहले से ही भारत की प्रमुख समस्या साम्प्रदायिकता रही है। स्वतंत्रता के पहले जिन्ना और सावरकर दोनों साम्प्रदायिकता का नेतृत्व कर रहे थे। स्वतंत्रता के बाद पंडित नेहरू और गोडसे ने साम्प्रदायिकता का दायित्व स्वीकार कर लिया और लगातार साम्प्रदायिकता को बढ़ाते रहे। सांप्रदायिकता से देश को बहुत नुकसान हो चुका है और यदि साम्प्रदायिकता बढ़ती रही तो देश का और भी नुकसान संभव है। इसलिए साम्प्रदायिकता का समाधान होना चाहिए। साम्प्रदायिकता का समाधान दो तरीके से हो सकता है, एक है कानून के माध्यम से बल प्रयोग करके और दूसरा है सामाजिक माध्यम से बहिष्कार करके। सौभाग्य से पिछले 10 वर्षों से नरेंद्र मोदी कानून के माध्यम से साम्प्रदायिकता को कुचलने का प्रयास कर रहे हैं। दूसरी ओर मोहन भागवत भी लगातार बहिष्कार के माध्यम से साम्प्रदायिकता के बहिष्कार की कोशिश कर रहे हैं। जिस तरह गोडसे और नेहरू ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया था उसी तरह अब नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत मिलकर साम्प्रदायिकता से देश को मुक्त कर देंगे। अब देश को गांधी और राम के संतुलन मार्ग की जरूरत है। देश इस संतुलित मार्ग पर चल पड़ा है।

22—कांग्रेस के लिए इतनी निराशा उचित नहीं—

मुझे याद है की 60 वर्ष पहले हमारे नगर पालिका के चुनाव में एक

उम्मीदवार के जीतने की पूरी संभावना थी। वह बहुत प्रतिष्ठित थे दूसरी ओर जो दूसरा उम्मीदवार था वह चालाक निकला, उसने चुनाव के पहले ही अपनी हार मान ली और सिर्फ यह निवेदन किया कि मेरी जमानत बचा दी जाए। घर–घर जाकर उसने कहा कि मैं चुनाव इसलिए लड़ रहा हूं कि मेरी इज्जत बच जाए, मेरी जमानत बच जाए। मुझे जीतने के लिए वोट नहीं चाहिए। जब चुनाव परिणाम आया वही हारा हुआ उम्मीदवार जमानत बचाते बचाते जीत गया। लगता है कि कांग्रेस पार्टी भी अब यही दांव चल रही है। कल कांग्रेस के अध्यक्ष ने यह घोषणा करके एक समस्या पैदा कर दी कि यह अंतिम चुनाव हो रहा है। अगर यह चुनाव भी भारतीय जनता पार्टी इसी तरह भारी बहुमत से जीत गई तो कांग्रेस पार्टी के लिए यह अंतिम चुनाव होगा। भविष्य में किसी प्रकार के चुनाव की कोई संभावना नहीं है। इस तरह कांग्रेस पार्टी ने अप्रत्यक्ष रूप से अब साफ कर दिया है कि यदि नरेंद्र मोदी को दो तिहाई बहुमत मिल जाता है, तो वह संविधान में मनमाने संशोधन कर लेंगे और चुनाव इस तरह टाल सकते हैं जैसे कांग्रेस पार्टी समय–समय पर करती रही है। इसके आधार पर कांग्रेस पार्टी ने यह स्वीकार कर लिया है कि वह लड़ाई में तो शामिल नहीं है लेकिन भारतीय जनता पार्टी को दो तिहाई बहुमत नहीं मिलना चाहिए।मेरे विचार से कांग्रेस पार्टी को इतना निराश नहीं होना चाहिए। सन 75 में जब इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगाया था तब भी भारतीय जनता पार्टी इतनी निराश नहीं हुई थी जितनी निराशा आज कांग्रेस में दिख रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय जनता पार्टी विपक्षी दल के रूप में बैठना जानती है और कांग्रेस विपक्ष में बैठना नहीं जानती है, इसलिए वह इतनी निराशा है। यदि आपको राजनीति करनी है तो धैर्य तो रखना ही होगा।

23– लोक स्वराज की मांग है गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि–

30 जनवरी दिन के 11:00 बजे इस बात की समीक्षा करने का अवसर है कि आज भारत में गांधी की यह दुर्दशा क्यों हुई। यह बात तो बिल्कुल साफ है कि यदि आज देश में खुला मतदान हो जाए तो गांधी के विरोध में 90% वोट पड़ेंगे लेकिन यह बात भी विचारणीय है कि इसमें गलती किसकी है? गांधी का दो लोगों ने नुकसान किया सावरकर गांधी और गांधी विचारों के विरोधी थे नेहरू गांधी विचारों के विरोधी थे। नेहरू सत्ता में आए सावरकर कमजोर हो गए। नेहरू ने सत्ता के बल पर गांधी विचारों की हत्या कर दी गांधी को मानने वाले गांधीवादी नेहरू से धोखा खा गए और गांधीवादी नेहरू के द्वारा दी गई सुविधाओं के चक्कर में ही गांधी को भुला बैठे। नेहरू ने गांधी को कितना बड़ा धोखा दिया यह इस बात से स्पष्ट होता है कि भारत का विभाजन नेहरू पटेल और अम्बेडकर ने स्वीकार किया था गांधी ने नहीं। लेकिन सावरकरवादियों ने सारा दोष गांधी पर डाल दिया और गांधीवादी चुप रहे किसी गांधीवादी ने आज तक सामने आकर नहीं कहा कि विभाजन में नेहरू पटेल और अम्बेडकर दोषी थे। इसलिए अब समय आ गया है कि हम गांधी विचारों को आगे बढ़ावे। अब

समय आ गया है कि हम नेहरू और अम्बेडकर को किनारे करें, अब समय आ गया है कि लोक स्वराज की आवाज बुलंद करें। अब समय आ गया है कि जब तक लोकस्वराज्य की आवाज मजबूती से नहीं उठाती है तब तक हम नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत को ही स्वीकार करें। किसी भी हालत में गांधी को धोखा देने वाले नेहरू परिवार और सावरकरवादियों को आगे नहीं बढ़ने देना है, यही आज 30 जनवरी का संदेश है।

24–Indi गठबन्धन और परिवारवाद

इंडिया गठबंधन धीरे–धीरे सच्चाई की तरफ बढ़ रहा है। नीतीश कुमार ने इंडिया गठबंधन छोड़ दिया कल ही ममता बनर्जी ने भी इंडिया गठबंधन छोड़ दिया और यह घोषणा कर दी कि इंडिया गठबंधन के एक प्रमुख घटक कांग्रेस पार्टी को 543 में से 43 सीट भी नहीं मिलेगी। इस प्रकार की भविष्यवाणी से इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटक कांग्रेस पार्टी की बहुत छीछालेदर हुई है। विचारणीय प्रश्न यह है यह गठबंधन कितनी मेहनत से बना था और मिनट में ही ऐसा लगा जैसे कि बहुत मेहनत से बनाई गई खीर में छिपकली दिख गई हो। अब तो भविष्य में ऐसा दिखता है कि इंडिया गठबंधन में सिर्फ तीन प्रकार के लोग रह जाएंगे एक कांग्रेस दूसरे मुसलमान और तीसरे कम्युनिस्ट बाकी सारे लोग धीरे–धीरे या तो इंडिया गठबंधन छोड़ देंगे या निकाल दिए जाएंगे क्योंकि अवसरवादी गठबंधनों में कभी एकता नहीं बन सकती। कल ही हमने झारखंड में देखा है कि हेमंत सोरेन के जेल जाते ही वहां यह लड़ाई शुरू हो गई कि हेमंत के परिवार वालों को ही मुख्यमंत्री बनना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के बड़े पदों पर परिवार का ही पहला अधिकार होता है कितनी बेशर्मी के तर्क हैं लेकिन दिए जा रहे हैं क्योंकि कांग्रेस पार्टी का यह सिद्धांत ही है कि महत्वपूर्ण पदों पर केवल परिवार का ही पहला अधिकार होता है। इतनी बेशर्म तर्क के बाद भी अनेक कांग्रेसी नेहरू खानदान की वकालत करते रहते हैं क्योंकि रोजी–रोटी का सवाल है इस मामले में मैं नेहरू परिवार पर कोई प्रश्न नहीं कर रहा मैं तो उन कांग्रेसियों पर कर रहा हूं कि वह किसी एक परिवार की दलाली क्यों कर रहे हैं।

25–शांती से चली संसद में चर्चा–

आज दिन भर मैं टीवी पर संसद की कार्यवाही देखता रहा, बहुत आश्चर्य हुआ कि बहुत शांति के साथ संसद में चर्चाएं चलती रही। दोनों पक्ष गंभीरता से चर्चा करते रहे। मुझे तो इस प्रकार कभी–कभी ही देखने को मिलता है, अन्यथा संसद तो मछली बाजार बन जाती है। अभी यह पूरा का पूरा सत्र इसी प्रकार शांति से चल रहा है। यह नहीं कहा जा सकता कि इस शांति का आधार क्या है। या तो राहुल गांधी की गैर हाजिरी शांति का आधार हो सकती है। अन्यथा राहुल गांधी यदि संसद में रहते अवश्य ही हो हल्ला करके संसद के काम को बाधित करते हैं। संजय सिंह भी अभी जेल में है वह तो

संसद में हमेशा बेंच पर चढ़कर और चिल्लाना ही एकमात्र कार्य मानते थे,यह भी एक कारण हो सकता है। एक प्रमुख कारण यह हो सकता है की संसद का यह अंतिम सत्र है और इसके बाद चुनाव होने वाले हैं, इसलिए सांसद गंभीर हो गए हो। एक कारण यह भी हो सकता है कि संसद के पिछले सत्र में सरकार ने बल प्रयोग किया था। डंडे मार–मार कर इनको बाहर निकाला था उस चोट की सांसदों को याद आ रही हो और वे अब दोबारा वैसी गलती ना करना चाहते हो। कारण जो भी हो लेकिन संसद आराम से चलनी चाहिए जिस तरह वर्तमान समय में चल रही है।

26–आरक्षण बढ़ाने के बजाय श्रम की मांग बढ़ाना चाहिए–

राहुल गांधी ने कहा है कि यदि कांग्रेस सत्ता में आएगी तो आरक्षण बढ़ाया जाएगा जातियों को भी मान्यता दी जाएगी। नरेंद्र मोदी ने कहा है कि भारत में जब आरक्षण लागू हुआ तो पंडित नेहरू इस आरक्षण के पक्ष में नहीं थे। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि आरक्षण की प्रणाली में सुधार होना चाहिए जो लोग आरक्षण का लाभ ले चुके हैं उन जातियों या व्यक्तियों को आरक्षण से बाहर कर देना चाहिए। मैं लंबे समय से कह रहा हूं कि आरक्षण श्रम शोषण का सिद्धांत है आरक्षण को पूरी तरह समाप्त करके श्रम की मांग और श्रम के मूल्य को बढ़ाया जाना चाहिए। मेरे विचार से मैं अब भी अपनी बात पर कायम हूं। यदि राहुल गांधी आरक्षण को और बढ़ाना चाहते हैं तो मैं राहुल गांधी को इस बात की चुनौती देता हूं कि उन्हें सत्ता में नहीं आने दिया जाएगा। हम इसके लिए पूरा जन जागरण करेंगे कि ऐसे किसी भी समूह को सत्ता में नहीं आने देना है, जो आरक्षण के पक्ष में हो। वर्तमान परिस्थितियों में आरक्षण को संशोधित करना सामाजिक दृष्टि से तो उचित है किंतु राजनीतिक धरातल पर घातक होगा। इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में दो बातें की जा सकती हैं, पहले सुप्रीम कोर्ट की सलाह के अनुसार आरक्षण प्राप्त कर चुके लोगों को आरक्षण से बाहर कर दिया जाए और दूसरी बात यह है कि श्रम की मांग और श्रम का मूल्य इतना बढ़ने दिया जाए कि आरक्षण की आवश्यकता ही समाप्त हो जाए। मैं फिर कहना चाहता हूं कि मैं उस पार्टी का भरपूर विरोध करूंगा जो आरक्षण का समर्थन करती हैं। हम कल से आरक्षण पर चर्चा कर रहे हैं। मैं किसी भी प्रकार के आरक्षण के विरुद्ध हूं लेकिन मैं वर्तमान सरकार को आरक्षण समाप्त करने की कोई सलाह नहीं दे रहा हूं क्योंकि आरक्षण समाप्त करने से वर्तमान समय में तीन कठिनाइयां पैदा हो जाएंगी। पहली है राजनीतिक दूसरी है सामाजिक और तीसरी है आर्थिक। यदि वर्तमान सरकार आरक्षण को अभी समाप्त कर देती है तो सरकार के सामने राजनैतिक संकट पैदा हो जाएगा, क्योंकि कांग्रेस पार्टी पूरी तरह जातिवाद सांप्रदायिकता को उभार कर राजनैतिक लाभ लेना चाहती है। जब तक विपक्ष जातिवाद सांप्रदायिकता के विरुद्ध खड़ा नहीं होता तब तक सरकार आरक्षण समाप्त नहीं कर सकेगी। इसलिए अभी कुछ वर्षों तक कांग्रेस

के समाप्त होने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। सामाजिक मामला यह है कि आरक्षण के माध्यम से जो भी 5–10% अवर्ण आगे बढ़ चुके हैं उनका आगे बढ़ना भी रुक जाएगा। इससे सामाजिक भेदभाव बढ़ने का खतरा बना रहेगा। आर्थिक समस्या यह है कि आरक्षण का लाभ सिर्फ बुद्धिजीवी वर्ग उठा रहे हैं श्रमजीवियों को आरक्षण का कोई लाभ नहीं मिल रहा है। बल्कि कुछ ना कुछ नुकसान ही हो रहा है ऐसे समय में यदि आरक्षण को समाप्त भी कर दिया जाए तब भी श्रमजीवियों को किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं होगा। इसके समाधान के लिए हमें श्रम की मांग बढ़ाना होगा और श्रम का मूल्य बढ़ जाएगा तो आरक्षण को तत्काल हम समाप्त कर सकते हैं।गरीब आदमी और अमीर के बीच इतनी आर्थिक विषमता बनी रहे और आरक्षण समाप्त कर दिया जाए यह उचित नहीं प्रतीत होता है। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि वर्तमान सरकार को अभी आरक्षण के मामले में, कांग्रेस के समापन की एवं श्रम मूल्य वृद्धि की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तब तक क्रीमी लेयर का मामला लागू किया जा सकता है अर्थात आरक्षण का लाभ ले चुके परिवारों को आरक्षण से बाहर कर दिया जाए यही एकमात्र समाधान दिख रहा है।

<u>जूम</u>

27–रात 8:00 बजे जूम पर इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हुई कि हमें अच्छे लोगों को चुनाव में जीत कर उसे पावर देना चाहिए अथवा पावर को नीचे करके ऊपर में पावर ही कम कर देना चाहिए। दोनों तरह के विचार आए। मेरा अपना विचार यह है कि अच्छे लोगों को पावर दिया जाए इसकी अपेक्षा पावर कम कर दिया जाए और जितना कम हो जाए उस थोड़े से पावर को ही किसी अच्छे व्यक्ति को दिया जाए ना कि अच्छे व्यक्ति को पावर दे दिया जाए। अभी आज का समाचार है कि कोलकाता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी आपस में इस विषय पर टकरा गए हैं कि दोनों न्यायाधीशों में से कौन न्यायाधीश ईमानदार है। एक बंगाल सरकार के खिलाफ है दूसरा बंगाल सरकार के पक्ष में। हमने जब से कार्यपालिका और विधायिका को भ्रष्ट मान कर न्यायपालिका को पावर देना शुरू किया तब से ही न्यायपालिका में भ्रष्टाचार बढ़ना शुरू हो गया न्यायपालिका में झगड़ा भी शुरू हो गया क्योंकि भ्रष्टाचार करना व्यक्ति का चरित्र कम और पावर का चरित्र अधिक है। मेरा यह मत है कि न्यायपालिका को और विधायिका को अधिक शक्ति देने की अपेक्षा शक्ति परिवारों को दे दिया जाए। गांव को दे दिया जाता है तो यह चरित्र की समस्या अपने आप हल हो जाएगी न्यायपालिका के झगड़े इसका स्पष्ट उदाहरण है।

28–रात 8:00 बजे जूम पर बैठकर समाज की वर्तमान स्थिति पर चर्चा कर रहे थे। चर्चा में यह बात सामने आई कि वर्तमान समाज में शरीफ लोग और अधिक शरीफ होते जा रहे हैं चालाक लोग अधिक चालाक होते जा रहे हैं। चालाक

लोगों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है ऐसी स्थिति में लोग ठगे जा रहे हैं और चालाक लोग ठग ले रहे हैं। शरीफ लोगों का रुझान धर्म की तरफ बढ़ रहा है या बढ़ाया जा रहा है। चालाक लोगों का रुझान राजनीति की तरफ लगातार बढ़ रहा है। यह एक गंभीर चिंता का विषय है, इसका समाधान खोजने की आवश्यकता है। मेरे विचार में इस समस्या का समाधान यही हो सकता है कि शरीफ लोगों को शराफत छोड़कर समझदारी की दिशा में बढ़ाया जाए और चालाक लोग किसी भी तरीके से अपनी चालाकी के माध्यम से सफल न हो सकें इसकी योजना सरकार के द्वारा बनाई जाए। सरकार इस बात की गारंटी दे कि चालाक लोगों को सफल नहीं होने दिया जाएगा। यदि इन दोनों दिशाओं में एक साथ काम होगा तब तो हम शरीफ और चालाक के अंतर को कम कर सकते हैं। सौभाग्य से मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान दुनिया में पहली बार शुरुआत कर रहा है कि शराफत को समझदारी में बदला जाए। प्रतिदिन 8:00 बजे बैठकर इस दिशा में सक्रिय हैं दूसरी ओर संस्थान का यह भी प्रयत्न है कि समाज राज्य पर हमेशा नियंत्रण करने का प्रयत्न करें इसके लिए भी संस्थान राज्य पर दबाव बनाए हुए हैं। मुझे इस बात का संतोष है कि ऐसा दबाव बनाने का श्रेय मार्गदर्शन सामाजिक शोध संस्थान को जाता है जो दुनिया में अकेले इसकी शुरुआत कर रहा है। मुझे विश्वास है कि आप सब लोगों का प्रयत्न अवश्य सफल होगा।

कार्यक्रम

29– बन रही देश भर के विचारकों के प्रोत्साहन की योजना

हम पिछले दो दिनों में यह चर्चा कर चुके हैं, की अब हिंदुत्व के सामने सुरक्षा का संकट नहीं है और दूसरी बात हिंदुत्व ही दुनिया के मार्गदर्शन का नेतृत्व करने की क्षमता रखता है। प्रश्न उठता है कि वह मार्ग क्या हो सकता है। मेरे विचार से अब हिंदुत्व को वैचारिक धरातल पर दुनिया का मार्गदर्शन करना चाहिए क्योंकि सांस्कृतिक हिंदुत्व सुरक्षा तो कर सकता है बिस्तार नहीं कर सकता। वैचारिक हिंदुत्व ही विस्तार करने की क्षमता रखता है। जब से हिंदुत्व ने वैचारिक मार्ग छोड़कर संस्कृतिक धरातल को महत्वपूर्ण बनाया तब से ही हिंदुत्व कमजोर होना शुरू हुआ। अब समय बदल गया है और वैचारिक हिंदुत्व को आगे आना चाहिए इसके लिए यह आवश्यक है कि विचार मंथन को प्रोत्साहित किया जाए। इस संबंध में हम क्या कर सकते हैं यह बात भी बहुत महत्वपूर्ण है। देश में विचार को का अभाव हो गया है साहित्य लगातार बढ़ता जा रहा है ऐसी स्थिति में नए–नए विचारक पैदा हो रहे है। नए–नए विचारक पैदा हो विचार मंथन बढ़े इस दिशा में प्रयास होना चाहिए। हम लोगों का ज्ञान यज्ञ परिवार इस दिशा में शुरुआत कर रहा है। हम प्रयास कर रहे हैं कि भारत से 100 ऐसे विचारकों का एक ग्रुप बने जो दुनिया को नया मार्ग दिखा सके। इनकी एक पहचान बने यह विचारक गंभीर चिंतन करने की क्षमता रखते हो इसके लिए हम नई तकनीक जूम के सहारे प्रतिदिन रात को 8:00 बजे से 9:00 तक एक कार्यक्रम आयोजित

करना शुरू कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में जो लोग जुड़ेंगे वह विचारों की दिशा में आगे बढ़ेंगे। इस कार्यक्रम में जुड़ने वालों की हर क्षमता में परीक्षा भी आयोजित की जाएगी। और जो परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे उन्हें विचारक की पहचान उपलब्ध कराई जाएगी साथ ही उन्हें सम्मानित भी किया जाएगा। मैं समझता हूं कि दुनिया में हिंदुत्व के विस्तार के लिए यह मार्ग उचित हो सकता है। यह कार्यक्रम इसी वर्ष 15 अप्रैल से शुरू किया जाएगा।

सूचना– पूर्व नियत कार्यक्रम 'नवाडीह महायज्ञ' स्थानीय समिति की द्वारा स्थगित कर दिया गया है। उन्ही तिथियों पर महाबीरगंज में 9 दिवसीय यज्ञ का आयोजन इस स्थगन का कारण है। तत्पश्चात संसदीय चुनाव उपरांत ही कार्यक्रम की संभावना है।

श्रद्वेय बजरंग मुनि के दायित्व मुक्त होने से उत्पन्न आर्थिक परिस्थितियों एवं ज्ञानतत्व पत्रिका का प्रकाशन एवं वितरण सुचारू रूप से न होने के कारण लिये गये कुछ निर्णयों से आपको अवगत कराना है।

1–ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका की डिजिटल कापी का प्रकाशन संस्थान द्वारा सर्वसाधारण के लिए नियमित रूप से किया जाएगा।

2–जिन पाठको का शुल्क अब तक आ चुका है, सिर्फ उन्हें ही नियमित रूप से ज्ञानतत्व पत्रिका की प्रिंटेड कापी भेजा जाएगा।

3–ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का डिजिटल अथवा प्रिटेड पत्रिका पाने के लिए 7869250001 पर अथवा हमारे और web-App-MARGDARSHAK.INFOसे सम्पर्क करें।

बैक विवरण–

MARGDARSHAK SAMAJIK SHODH SANSTHAN

A/C No- 777305500185

IFSC Code-ICIC0007773

BRANCH - FAFADIH Raipur

हमारी संस्थाएँ

- मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान
- ज्ञान यज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य

- समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार के कार्य

- देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

- ज्ञान चर्चा- प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।
- ज्ञान मंथन- प्रत्येक रविवार को जूम एप के माध्यम से दोपहर ग्यारह बजे बजरंग मुनि जी द्वारा पूर्व निर्धारित विषय पर विचार प्रस्तुति तथा सोमवार को ग्यारह बजे उक्त विषय पर प्रश्नोत्तर ।
- मार्गदर्शक मंडल- ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।
- ज्ञान कुंभ- वर्ष मे दो बार पंद्रह-पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमे मार्ग दर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो-दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- फेसबुक एप से प्रसारण
- वाट्सएप ग्रुप से प्रसारण
- जूम एप पर वेबिनार
- यू टयूब चैनल
- इस्टाग्राम
- टेलीग्राम
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारु रूप से होना शुरु हो गया है। इसकी सहयोग राशि रु. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक-68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक- छ.ग./रायगढ़/010/2022-2024

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोक तंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रुपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

- बजरंगलाल

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492001
Website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल

09617079344

Email : bajrang.muni@gmail.com
support@margdarshak.info
Facebook Id : बजरंग मुनि (User Name)

मुद्रक - माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)